पशुरोगों का घरेलू उपचार

कृषि कुंभ (जुन, 2022), खण्ड 02 भाग 01, पृष्ठ संख्या 45–47

पशुरोगों का घरेलू उपचार

सतेंद्र कुमार[1] ,पीके उपाध्याय[2], एवं रामजी गुप्ता[3] ,

शोध छात्र[1], प्रोफेसर[2,3]

विभाग पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर 20802

E.mail : satendrakumar19951@gmail.com

आज इस समय लगभग पूरे विश्व में महामारी का प्रकोप फैला हुआ है इस महामारी प्रकोप के समय भारत में अन्य देशों के अपेक्षाकृत महामारी से निपटने के लिए अग्रणी देश है महामारी में सबसे ज्यादा ठीक होने वाले व्यक्तियों की संख्या भारत में है क्योंकि भारत देश में महामारी से निपटने के लिए हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने जनता को यह संदेश दिया आप घर पर ही रहे हैं और गर्म पानी तथा काढ़ा बनाकर पियो इस महामारी में यह देखा गया कि एलोपैथी औषधि की अपेक्षा आयुर्वेदिक औषधि अधिक कारगर साबित हुई है ऐसे ही कुछ हमारे पशुओं में होने वाली बीमारी जो आयुर्वेदिक औषध के द्वारा निवारण किया जाता है जिससे हमारे पशुपालकों के कम खर्च में पशुओं की बीमारी की समस्या काफी हद तक निवारण किया जा सकता है तथा पशुओं की बीमारी को जड़ से समाप्त किया जा सकता है

कुछ विभिन्न प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियां जो कि पशुओं की बीमारी में निवारण में सहायक सिद्ध होती हैं जन एवं स्वास्थ्य और पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए यहां पर कुछ घरेलू नुक्से दिए जा रहे हैं जिनका उपयोग पशुओं में ज्वर होने पर किया जाता है ताकि पशु को एंटीबायोटिक्स दर्द निवारक दवाओं का दुष्प्रभाव से बचाया जा सके और आयुर्वेदिक औषधियों के उपयोग एवं पशुओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव से बचा जा सकता है दर्द निवारक एवं ज्वर नासी औषधियों के प्रयोग से पर्यावरण को भी कोई खतरा नहीं होगा बल्कि पशुपालकों का खर्च भी कम होगा आशा की जाती है कि पशुपालक इनका प्रयोग करके लाभान्वित अवश्य होंगे।

आधुनिक औषधि विज्ञान में उपयोग की जाने वाली लगभग 80% से भी अधिक औषध वनस्पतियों से प्राप्त की जाती है अतः यह संभव सी बात है कि एथनो वेटनरी में उपयोग की जाने वाली घरेलू नुक्से में सफल हो रहे हैं आधुनिक औषध विज्ञान में उपयोगी ग्वारपाठा हल्दी एवं हल्दी का उपयोग पशुओं में थनैला रोग से उत्पन्न होने वाली सूजन को ठीक करने के साथ–साथ रोगाणु रोधी भी सिद्ध हो चुका है इस प्रकार आयन में केवल सूजन होने पर सरसों या नारियल का तेल लहसुन ,हल्दी एवं तुलसी के पत्तों का कारगर प्रभाव मिलता है जीरा, काली, मिर्च, धनिया, लहसुन, प्याज, हल्दी एवं अन्य घरेलू सामग्री का उपयोग बुखार होने पर किया जाता है।

थनैला रोग

थनैला रोग दुग्ध ग्रंथ का रोग है जिसमें दुग्ध ग्रंथियां में सूजन आ जाती है यह रोग दुधारू पशुओं में आम समस्या है इसके कारण पशुपालकों को बहुत अधिक नुकसान होता है जिस को जड़ से समाप्त नहीं किया जा सकता लेकिन इसके द्वारा होने वाले नुकसान को अच्छे प्रबंधन द्वारा कम किया जा सकता है थनैला रोग के कई कारणों में से एक सूक्ष्मजीवों द्वारा उत्पन्न होने

वाले थनैला रोग में इसका उपयोग बहुत महत्वपूर्ण है

ग्वारपाठा के पत्ते	–250 ग्राम
हल्दी पाउडर	–50 ग्राम
चुना पाउडर	–15 ग्राम
नींबू	– दो
कड़ी पत्ता या मीठी नीम	– दो मुट्ठी

तैयार करने की विधिः–

सबसे पहले ग्वारपाठा के पत्तों को गूदा निकालकर इसमें हल्दी पाउडर मिला लें अब इसमें चूना मिलाकर इसको अच्छी तरह से मिश्रण बना ले उसके बाद मलहम बनाकर बनाकर भंडारित कर ले

उपयोग की विधि

1. थनो एवं आयन साफ पानी में धो ले उसके पश्चात मिश्रण में से 50 से 100 ग्राम लेकर 150 –200 मिलीलीटर पानी मिलाकर पतला कर ले अब इसको दिन में 8 से 10 बार 5 दिन तक या ठीक होने तक आयन एवं थनो के ऊपर लगाएं पशु को प्रतिदिन 2 फलों को काटकर दिन में खिलाएं।
2. सेवन की दूसरी विधि के अनुसार सबसे पहले चारों थानों का दूध निकाल ले फिर उसके बाद उस उपरोक्त विधि से तैयार मलहम का दसवां भाग 1000 मिलीलीटर शुद्ध पानी में मिलाकर आयन पर लगाएं ऐसा दिन में 2 घंटे के अंतराल पर5 दिन तक करें आयन को साफ पानी से धोखा लगाएं प्रतिदिन 2 फलों को काटकर दिन में खिलाएं।

औषधि निर्देश – मलहम लगाने से पहले आयन एवं थनो को उबले हुए पानी को ठंडा होने के बाद उसमें किसी भी रोगाणु रोधी का प्रयोग अवश्य करें

पशु को भूख ना लगना (एनोरेक्सिया)

सौंफ का पाउडर + गुड़60 ग्राम + 20 ग्राम काला नमक को गुड़ में मिलाकर दिन में दो बार दिए जाने से पशुओं की भूख खुल जाती है

अपच

मैग्नीशियम सल्फेट 500 ग्राम + सादा नमक 200 ग्राम + सौठ का पाउडर 10 ग्राम को 500 मिलीलीटर गुनगुने पानी में डालकर प्रयोग करने से अपच का निदान हो जाता है

कब्ज

कोई भी बनस्पति तेल (सरसों का तेल) 500 मिलीलीटर पिलाएं तथा 100 ग्राम हल्दी का काढ़ा 1 लीटर पानी में डालकर उसको 2 से 3 दिनों प्रतिदिन दिए जाने पर पशु की कब्ज समाप्त हो जाती हैं

आफरा

1. कोई भी बनस्पति तेल (सरसों का तेल) 500 मिलीलीटर पिलाएं पशुओं के लिए हींग 10 ग्राम+ काला नमक 20 ग्राम + तुलसी के बीज 5 ग्राम + सौठ का पाउडर को आपस में अच्छी तरह मिलाकर पशुओं को पानी के साथ मिलाकर गायों को पिलाने पर अपरा का प्रकोप कम हो जाता है
2. हींग 5 ग्राम + काला नमक 100 ग्राम + साबूदाना 50 ग्राम + सौठ का पाउडर 25 ग्राम + अजवाइन 100 ग्राम + गुड 500 ग्राम के मिश्रण को 1000 मिलीलीटर पानी में उवाले तथा पानी की आधी मात्रा होने पर गाय को दें।

दस्त

1. शीशम की पत्ती का पाउडर 70 –100 ग्राम प्रीति 100 किलोग्राम शरीर भार के अनुसार बछड़ों को मुख के द्वारा सेवन कराने से दस्त रुक जाते हैं।
2. आध पक्का हुआ बेल का पाउडर 15 – 25 ग्राम प्रति किलोग्राम शरीर भार के हिसाब से पशुओं को देने पर दस्त बंद हो जाएंगे।

3. मुल्तानी मिट्टी 5 ग्राम + चाक 5 ग्राम + कत्था 0.8 ग्राम + बेल 1 ग्राम फिटकरी 0. 8 ग्राम + मोथा 2 ग्राम कुटज की छाल 3 ग्राम को आपस में मिलाकर 5 दिनों तक प्रतिदिन दो बार खिलाएं।

निमोनिया

1. चाय की पत्ती + नीम की पत्ती + यूकेलिप्टस की पत्ती के मिश्रण को अथवा तारपीन के तेल को पानी में डालकर उसकी भाप देने से पशु में निमोनिया से आराम मिलता है।
2. 250 ग्राम मिलीलीटर वनस्पति तेल + 50 ग्राम कपूर के तेल को हल्का गर्म करके पशुओं के छाती के दोनों मालिश छाती के दोनों और लगाने पर पशु को तुरंत आराम मिलता है

घाव

तुलसी की पत्ती अथवा नीम की पत्ती को कुचलकर उसका मलहम बनाकर घाव पर रखकर पट्टी बांध देने पर जल्दी ठीक हो जाएगा घाव पुराना होने पर उसको हल्के गुनगुने पानी से साफ करके निवोली का चूर्ण शरीफा 2 :1 के अनुपात में लेकर कटहल की पत्तियों को पीसकर तेल में आध पक्का करके घाव पर पट्टी बांधने पर पशु को जल्द आराम मिलता है।

जॉइंट सूजन और पोकवित्त

घोंघा का पाउडर 10 ग्राम + ग्वारपाठा का गोदा 10 ग्राम + सहजन की फली 10 ग्राम + गेरू 30 ग्राम को 150 मिलीलीटर अंडी का तेल मैं मिश्रण को हल्का गर्म कर मिला गर्म करके हल्का गुनगुना करके प्रभावित शरीर के भाग पर दिन में दो तीन बार लगाने पर इसमें जल्द ही आराम मिलता है।

एफएमडी घाव

बबूल की छाल जामुन की छाल को समान भागो मिलाकर उबाल कर ठंडा कर ले एवं शरीर को प्रभावित भाग पर दिन में तीन बार तथा 3 से 5 दिन तक धोने पर खुर पका मुंह पका छालों में आराम मिलता है

पोल्ट्री में श्वसन संक्रमण

कालमेघ का पूरा पौधा 2 लीटर पानी में उबालकर जब आधा हो जाए तब उसमें दो मुट्ठी भर कच्चा चावल डालकर एक रात के लिए रख दें इसके पश्चात मुर्गियों के समूह को खिलाने पर उनमें श्वसन संक्रमण के कारण मृत्यु दर में कमी देखी गई है

पोल्ट्री में गोलक्रमि

पपीते के रस को 10 से 15 मिलीलीटर लेकर 50 मिलीलीटर पानी में मिलाकर 5 दिनों तक मुर्गियों को देने से मुर्गियों में गोल क्रम मैं कमी आती है यह मिश्रण मुर्गियों 10 मुर्गियों के लिए पर्याप्त होता है तथा घर के पिछवाड़े (बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग) में पाली गई मुर्गियों गोल क्रम के नियंत्रण का सटीक उपाय है 250 ग्राम हल्दी के जूस को मुर्गियों के पीने वाले पानी में प्रत्येक माह देने पर मुर्गियों को गोल क्रम का प्रकोप कम होता है यह मिश्रण 10 मुर्गियों के लिए पर्याप्त है

आत में परजीवी

गुर्ज का चूर्ण काला जीरा वेदंगा नीम मोथा करंज इनके बीजों को समान मात्रा में और डकमाली एक चौथाई भाग को आपस में मिलाकर खूब अच्छी तरह कर ले उसके पश्चात 10 से 100 ग्राम खाली पेट पशु को खिलाने से पशुओं के के परजीवी समाप्त हो जाते हैं।